टिप्पणी

20

उनको प्रणाम!

आपने अपने आस-पास ऐसे लोगों को देखा होगा, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर साहस और हौसले के साथ अथक प्रयास और संघर्ष किए, लेकिन किन्हीं कारणों से वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। ऐसे लोगों को भी देखा होगा, जो बड़े ही ईमानदार, मेहनती, संघर्षशील और सदैव उत्साह से भरकर काम करते हैं। ज़रूरी नहीं कि ये लोग बहुत धनवान या सुविधा संपन्न ही हों, बल्कि कई बार तो लोगों को मामूली सुविधाओं का भी अभाव झेलना पड़ता है। अभावों में रहते हुए भी ये किसी से कोई शिकायत नहीं करते, दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाते, अपने अभावों का दूसरों के सामने रोना नहीं रोते। ऐसे लोग संघर्ष तो पूरी ईमानदारी से और पूरी शक्ति से करते हैं लेकिन हमेशा सफल नहीं होते। सफलता को ही सब कुछ मानने वाले समाज में ऐसे लोगों की उपेक्षा होती है। लेकिन आपके मन में ऐसे लोगों के प्रति श्रद्धा सम्मान का भाव ज़रूर होगा।

इस पाठ में कवि ने ऐसे ही लोगों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम किया है। आइए, इस पाठ को पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- जीवन में साहस, संकल्प और संघर्ष का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रतिकूल परिस्थितियों में तनाव को नियंत्रित करने के उपाय बता सकेंगे;
- सफलता और असफलता के विभिन्न पक्षों पर विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- कविता में आए संदर्भों का स्पष्टीकरण कर सकेंगे;
- कविता के मार्मिक अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

20.1 मूल पाठ

उनको प्रणाम

जो नहीं हो सके पूर्ण–काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।

कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य–भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए!
– उनको प्रणाम!

जो छोटी–सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि–पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
– उनको प्रणाम!

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह–रह नव–नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम–समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
– उनको प्रणाम!

कृत–कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
– उनको प्रणाम!

दृढ़ व्रत औ दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति–मत;
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत!
– उनको प्रणाम!

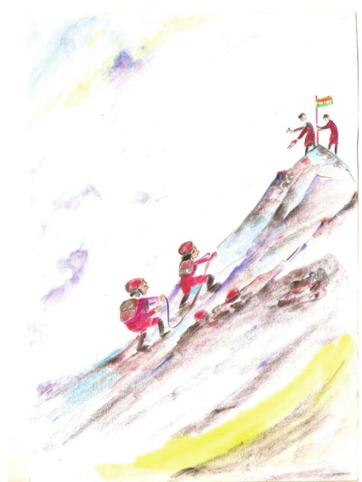

शब्दार्थ

पूर्ण–काम	– सफल, वह व्यक्ति जो लक्ष्य प्राप्त कर ले
कुंठित	– भोथरा, जिसमें धार न हो
लक्ष्यभ्रष्ट	– निशाने से चूका हुआ
अभिमंत्रित	– मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ
रण	– युद्ध
रिक्त	– खाली
तूणीर	– तरकस (जिसमें तीर रखे जाते हैं)
नैया	– नाव
उदधि	– समुद्र
निराकार	– जिसका आकार न हो
समाधि	– किसी दिवंगत महापुरुष की स्मृति में निर्मित स्मारक या जहाँ पार्थिव शरीर या अस्थियाँ रखी गई हों,
कृत–कृत्य	– काम पूरा होने से मिलने वाली सार्थकता
प्रत्युत	– बल्कि, इसके विपरीत, वरन
दृढ़	– अटल, विचलित न होने वाला
व्रत	– संकल्प, प्रतिज्ञा
दुर्दम	– जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, प्रबल
मूर्तिमंत	– साकार, साक्षात
निरवधि	– जिसकी कोई निश्चित समय–सीमा न हो
धुन	– लगन, किसी कार्य में बराबर लगे रहने की प्रवृत्ति

अतुलनीय	– जिसकी तुलना न की जा सके
प्रतिकूल	– विपरीत
मनोरथ	– मन की कामना, अभिलाषा

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
– उनको प्रणाम!

–नागार्जुन

क्रियाकलाप-20.1

आपने 'उनको प्रणाम' कविता पढ़ी। इस कविता की 'कुछ कुंठित ... तूणीर हुए' पंक्ति को फिर से पढ़िए। इस पंक्ति में 'कुंठित', 'लक्ष्य-भ्रष्ट' और 'अभिमंत्रित' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है? 'तीर' के लिए न! तो, ये शब्द 'तीर' की विशेषता को बता रहे हैं– कुंठित तीर, लक्ष्यभ्रष्ट तीर और अभिमंत्रित तीर। 'तीर' जैसा कि आप जानते हैं, एक वस्तु का नाम है और नाम को व्याकरण की शब्दावली में 'संज्ञा' कहा जाता है। कैसा तीर? जो शब्द यह बताएँ वे कहलाते हैं–विशेषण। इस तरह कुंठित, लक्ष्य-भ्रष्ट और अभिमंत्रित शब्द हुए विशेषण। ये शब्द जिसकी विशेषता बता रहे हैं यानी 'तीर', वह हुआ विशेष्य। इसी तरह 'साहसी बालक', 'चतुर व्यक्ति', 'काला घोड़ा', 'तीन लड़कियाँ' पर विचार करें। इनमें विशेषण हैं– साहसी, चतुर, काला और तीन। इनके विशेष्य हुए क्रमशः बालक, व्यक्ति, घोड़ा और लड़कियाँ। कविता की शेष पंक्तियों में से कुछ विशेष्य यहाँ दिए गए हैं, उनके लिए कविता में प्रयुक्त विशेषण/विशेषणों का उल्लेख कीजिए:

विशेष्य	विशेषण
नैया	
शिखर	
उत्साह	
समाधि	
व्रत	
साहस	
जीवन	
सेवाएँ	
परिस्थिति	

टिप्पणी

0.2 आइए समझें

20.2.1 अंश-1

आइए, कविता को ठीक से समझने के लिए पहले अंश को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं जो हाशिए पर दिया गया है।

कविता की पहली दो पंक्तियों में कुछ लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट किया गया है। जानते हैं किन लोगों के प्रति? उन लोगों के प्रति जिन्होंने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परिश्रम और संघर्ष तो बहुत किया, लेकिन जो किन्हीं कारणों से अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ प्रयास करता है। कुछ लोग अपने प्रयास में सफल हो जाते हैं और लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो प्रयास तो करते हैं लेकिन लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते। आमतौर पर सफल होने वालों का सम्मान किया जाता है लेकिन कवि ऐसे लोगों के संघर्ष के प्रति आदर का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम करता है जो सफल नहीं हो सके।

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।

कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए!
- उनको प्रणाम!

आगे की पंक्तियों में कवि ऐसे वीरों के बारे में बात कर रहा है जो युद्ध के मैदान में पूरी तैयारी और उत्साह के साथ गए थे। जिनके पास अभिमंत्रित तीर थे यानी ऐसे तीर थे जो लक्ष्य को भेदने में पूरी तरह सक्षम थे। मगर जब युद्ध हुआ तो किन्हीं कारणों से उनके तीर लक्ष्य को भेदने में नाकाम हो गए अर्थात् अपना कार्य ठीक से नहीं कर सके, अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके। जो युद्ध के मैदान में गए तो लड़ने के लिए थे, लेकिन लड़ाई समाप्त होने से पहले ही उनके तरकस खाली हो गए। प्राचीन काल में धनुष और बाण का प्रयोग युद्ध में किया जाता था। बाणों अर्थात् तीरों को रखने के लिए योद्धा तरकस का उपयोग करते थे। कविता की इस पंक्ति में 'तूणीर' शब्द तरकस के लिए आया है। 'रिक्त तूणीर' का आशय तरकस का तीरों से खाली होना है। मान लीजिए कोई योद्धा लड़ाई के मैदान में लड़ने के लिए खड़ा हो और उसके तीर अपने लक्ष्य से निरंतर चूकते रहे, तरकस में एक भी तीर नहीं बचे तो उस समय उस योद्धा के मन की दशा कैसी होगी– इसका कुछ अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं।

आइए, कविता के आशय को एक बार और समझने का प्रयास करें। कवि का उद्देश्य यहाँ युद्ध के मैदान में तीर और तरकस के बारे में बात करना नहीं है। वह इनके माध्यम से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्षरत लोगों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है, जो साधनहीन होने के कारण असफल हो गए पर जिन्होंने अपने हौसले और हिम्मत में कमी नहीं आने दी। कवि हमारे भीतर उनके प्रति आदर का भाव पैदा करना चाहता है। कवि चाहता है कि हम ऐसे लोगों को सम्मान दें, जो सक्षम होने और प्रयास करने के बावजूद संसाधनों के अभाव में अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए। कवि की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण सफलता नहीं, लक्ष्य के लिए किया गया श्रम और संघर्ष है, उसके लिए अपेक्षित हौसला और हिम्मत है।

टिप्पणी

20.2.2 अंश- 2

आइए, कविता के दूसरे अंश को फिर से पढ़ें। आपकी सुविधा के लिए यह अंश हाशिए पर दिया गया है।

जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
- उनको प्रणाम!

यहाँ कवि ऐसे लोगों की बात कर रहा है, जो छोटी नौका लेकर समुद्र को पार करने चले थे, लेकिन उनकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकी और वे समुद्र में ही समा गए। यहाँ कवि ऐसे लोगों के साहस और प्रयत्नों का आदर करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। आप भी ऐसे लोगों को जानते होंगे, जो साधनों के सीमित होने के बावजूद बड़े-से-बड़ा काम करने की ठान लेते हैं, भले ही अंत में वे लक्ष्य को प्राप्त न कर पाएँ। ऐसे लोगों में इतना साहस और ऐसी लगन होती है कि वे अपने प्राणों तक की चिंता नहीं करते।

जानते हैं कवि क्या कहना चाहता है? कवि के मन में बहादुर और साहसी लोगों के प्रति अपार आदर और सम्मान है। 'छोटी नैया' से कवि का आशय है–संसाधनों की कमी। यहाँ कविता में भाव के गांभीर्य और सौंदर्य पर ध्यान दीजिए। पार करना है 'उदधि' यानी विराट समुद्र और साधन है 'छोटी-सी नैया'। विराट समुद्र और छोटी-सी नाव का फर्क (कंट्रास्ट) उस साहस को उजागर करने में समर्थ है, जिसके सहारे जान की बाज़ी लगाकर लोगों ने संघर्ष किया। यह साहस और संघर्ष कवि को आकर्षित करता है, उसके सम्मान का विषय बनता है। एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जो सारे साधनों के होने पर भी कोई सार्थक काम नहीं करते क्योंकि उनमें साहस, हिम्मत और लक्ष्य का बोध ही नहीं होता। दूसरी तरफ़ ऐसे लोग हैं जो अत्यंत सीमित, असमर्थ साधनों के होते हुए भी बड़ी-से-बड़ी चुनौती का सामना करने उतर पड़ते हैं, क्योंकि उनमें लक्ष्य का बोध है और साहस, हिम्मत भी है।

आइए, एक उदाहरण से इसे समझते हैं। वास्को-डि-गामा का नाम आपने सुना होगा। उसे पूरी दुनिया जानती है। वास्को-डि-गामा ने एक नौका लेकर समुद्र के रास्ते भारत की खोज की थी। समुद्र में यात्रा करते हुए उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता पा ली। हमें ऐसे लोगों के परिश्रम, उत्साह और उपलब्धियों का आदर करना चाहिए। लेकिन, बहुत से ऐसे नाविक भी रहे होंगे, जिन्होंने समुद्री मार्ग से दुनिया के दूसरे देशों की खोज करने के अथक प्रयास किए होंगे, पर उन्हें सफलता नहीं मिली और वे अथाह पानी में समा गए अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो गए। उनके अनुभवों से सीखते हुए ही वास्को-डि-गामा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सका और दुनिया में अपना नाम रोशन कर सका। आज हम उन तमाम नाविकों का नाम नहीं जानते, लेकिन इससे उनके प्रयास और बहादुरी का महत्त्व कम नहीं हो जाता। इसीलिए कहा जाता है कि परिश्रम और संघर्ष कभी बेकार नहीं जाता, हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

तभी तो कवि भी ऐसे ही तमाम गुमनाम नाविकों को आदर के साथ प्रणाम करता है, जो प्रयत्न करने के बाद भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके।

'मन की मन में ही रही' से कवि का आशय है–चाही हुई बात का पूरा न हो पाना, सपनों का साकार न हो पाना।

कवि ने कविता में एक जगह 'निराकार' शब्द का प्रयोग किया है। निराकार का अर्थ होता है–जिसका कोई आकार न हो। यहाँ 'निराकार' होने से कवि का आशय उन अनाम लोगों के जीवन का अंत होने से है, जिन्होंने पूरे साहस के साथ अपने लक्ष्य को पाने की कोशिश की, लेकिन असफल होने के कारण इतिहास में खो गए। उनके साकार रहने का अर्थ है जीते-जागते हुए काम करना और निराकार होने का अर्थ है उनका न रहना, मृत्यु की गोद में सो जाना या इतिहास में खो जाना।

पाठगत प्रश्न-20.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'रिक्त तूणीर होने' का अभिप्राय है–

   (क) अनुभवहीनता ☐ (ख) कुंठित होना ☐

   (ग) विफल होना ☐ (घ) साधन की कमी ☐

2. कविता में लक्ष्य-भ्रष्ट प्रयुक्त हुआ है–

   (क) वीर के लिए ☐ (ख) तीर के लिए ☐

   (ग) तूणीर के लिए ☐ (घ) युद्ध के लिए ☐

3. 'निराकार' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है–

   (क) भाव का स्पष्ट न हो पाना ☐ (ख) सपने साकार न होना ☐

   (ग) इच्छा पूरी न होना ☐ (घ) विलीन हो जाना ☐

4. 'छोटी-सी नैया' का कविता में आशय है-

   (क) नाव का छोटा आकार ☐ (ख) संसाधनों की कमी ☐

   (ग) कम उत्साह ☐ (घ) इच्छा न होना ☐

20.2.3 अंश-3

आइए, अब हाशिए पर दिए गए तीसरे अंश को फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने ऐसे उत्साही लोगों का ज़िक्र किया है, जो बर्फ़ानी पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचना चाहते थे। केवल चाहते ही नहीं थे–इसके लिए उन्होंने कोशिश भी की। कोशिश भी एक बार नहीं, अनेक बार, फिर-फिर अपने उत्साह को बटोर कर। पिछली असफलता को भुलाकर फिर नया उत्साह, नया प्रयास! आदर करने लायक ही हैं न ऐसे लोग! कवि भी ऐसे लोगों को प्रणाम कर रहा है, भले ही इनमें से कुछ तो बर्फ़ में दबकर रह गए हों और कुछ ऐसे भी हों जो असफल होकर वापस लौट आये हों।

> जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
> रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
> पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
> कुछ असफल ही नीचे उतरे!
> - उनको प्रणाम!

हिमालय की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने वाले तेनज़िंग को पूरी दुनिया जानती है, लेकिन हिमालय के शिखर पर चढ़ने का प्रयास करने वाले तेनज़िंग पहले व्यक्ति नहीं थे। उनसे पहले भी न जाने कितने लोगों ने उस शिखर पर चढ़ने की कोशिश की होगी, लेकिन सफल नहीं हुए। इससे उन तमाम असफल लोगों का प्रयास बेकार नहीं हो जाता, बल्कि उनके अनुभवों से सीख-सीख कर ही तेनज़िंग शिखर पर पहुँचने में सफल हो सके।

कवि इन पंक्तियों में उन लोगों को प्रणाम करने की इच्छा व्यक्त करता है, जो गए तो थे बर्फ़ीले शिखरों पर चढ़ने के लिए, परंतु बर्फ़ खिसक जाने या ऐसी ही किसी विपत्ति के कारण बर्फ़ के नीचे ही दब गए। सामान्य लोग किसी की सफलता और असफलता को देखते हैं और सफलता को महत्त्व देते हैं, लेकिन कवि असफलता के पीछे छिपे प्रयत्नों को भी देखता है। उसके लिए लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों का महत्त्व सफलता से कम नहीं अधिक है। ऐसे लोगों को कवि इसीलिए बार-बार प्रणाम करता है।

शिखर का अर्थ होता है– ऊँचाई। यहाँ संकेत है– जीवन के उच्च आदर्श, मानवीय जीवन की ऊँचाइयों पर पहुँचने की आकांक्षा, श्रेष्ठतम मानव-मूल्यों की उपलब्धि आदि। हिम-समाधि का सामान्य अर्थ आप पढ़ चुके हैं। हिम यानी बर्फ़– ठंडा। हिम या ठंडा पड़ने का भी मानव-व्यवहार में संकेतार्थ होता है। ठंडा पड़ने का अर्थ है– मृतप्राय होना। यहाँ कवि कहना चाहता है कि जिन लोगों ने जोश-खरोश के साथ उच्च जीवनादर्शों के लिए संघर्ष किया किंतु सफल नहीं हो सके, उनका भी बड़ा योगदान है, क्योंकि उन्होंने आदर्शों, मानवीय गरिमा और जीवन-मूल्यों के लिए प्रयास किया।

क्रियाकलाप-20.1

1. आपने इस कविता में 'उदधि' शब्द पढ़ा, जिसका अर्थ है– समुद्र।

   समुद्र के समान अर्थ वाले अन्य शब्द हैं– जलधि, अंबुधि, वारिधि आदि।

   जल, अंबु, वारि–ये पानी के समानार्थक हैं। 'धि' का अर्थ होता है– धारण करने वाला। तो, जलधि का अर्थ हुआ– जल को धारण करने वाला यानी समुद्र। अर्थात् 'जल' के समानार्थक शब्दों में 'धि' जोड़कर समुद्र के पर्यायवाची बनाये जा सकते हैं।

   इसी तरह, एक शब्द है–जलद। इसमें 'जल' के साथ 'द' जुड़ा है। 'द' का अर्थ है– देने वाला। तो, जलद का अर्थ हुआ– जल देने वाला यानी बादल। आपने 'जलज' शब्द भी पढ़ा होगा। 'ज' का अर्थ होता है– उत्पन्न या पैदा होना। जो जल में उत्पन्न हो वह जलज।

   आप यहाँ पानी के समानार्थक शब्दों में 'द' जोड़कर बादल और 'ज' जोड़कर कमल के पर्यायवाची बनाइए:

   ....

टिप्पणी

20.2.4 अंश - 4

आइए, आगे बढ़ने से पहले कविता के अगले अंश को फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि के कहने का आशय यह है कि बहुत से देशभक्त ऐसे थे, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी, लेकिन जो आज़ादी का सुख नहीं ले पाए। ऐसे त्यागी व्यक्तियों तथा निस्वार्थ भाव से काम करने वालों को हम जल्दी ही भूल गए, जबकि ऐसे लोगों को हमें सदैव याद रखना चाहिए था। कवि यहाँ पर हमारी एक कमी की ओर संकेत कर रहा है, वह यह कि हम सभी अच्छी-बुरी बातें जल्दी ही भूल जाते हैं। हम उन त्यागी-वीरों को भी बहुत जल्दी भूल जाते हैं, जिनके बलिदान के कारण हम आज अस्तित्व में हैं, स्वतंत्र हैं। हमें अच्छी बातों को याद रखकर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और बुरी बातों को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए। इसमें कवि ने उन लोगों को याद करके प्रणाम किया है, जिनके संघर्ष और बलिदान के कारण ही हम आज स्वतंत्र देश के नागरिक हैं।

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
- उनको प्रणाम!

दृढ़ व्रत औ दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति-मंत;
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत!
- उनको प्रणाम!

आप यह जानते हैं कि देश को अंग्रेज़ी शासन से आज़ाद कराने के लिए बहुत से लोगों ने अथक प्रयास किए। चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, रोशन सिंह आदि का नाम आपने ज़रूर सुना होगा। देश को आज़ाद कराने वाले इन वीर सपूतों को अंग्रेज़ों ने फाँसी पर लटका दिया था। लेकिन, इनके अलावा और भी बहुत से ऐसे लोग थे, जो आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे। हम उनके नाम तो नहीं जानते, पर उनके प्रयत्न को कम करके नहीं आँका जा सकता।

इन पंक्तियों में कवि उन क्रांतिकारी वीरों को प्रणाम करता है, जो 'कृत-कृत्य' नहीं हो सके अर्थात् अपने किए काम का परिणाम नहीं देख सके।

आगे की पंक्तियों में कवि ने कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया है, वे शब्द हैं- दृढ़, व्रत, दुर्दम और मूर्तिमंत। यहाँ 'दृढ़' शब्द का अर्थ है- अटल, अर्थात् जिसे टाला न जा सके। 'दृढ़' शब्द का प्रयोग सबल, मज़बूत और कठिन के अर्थ में भी किया जाता है। 'व्रत' शब्द का प्रयोग यहाँ कवि ने संकल्प अर्थात प्रतिज्ञा के अर्थ में किया है। इस प्रकार, दृढ़व्रत का अर्थ हुआ-ऐसा संकल्प जो डिगे नहीं, टूटे नहीं।

'दुर्दम' का अर्थ है- जिसे दबाया न जा सके अर्थात् प्रबल। यहाँ 'दुर्दम साहस' से कवि का आशय ऐसे साहस से है, जिसे दबाया न जा सके।

उनको प्रणाम!

इन पंक्तियों में कवि ऐसे लोगों की बात करता है, जो दृढ़व्रती और दुर्दम साहस की जीती-जागती मूर्ति थे।

यहाँ कवि उन लोगों के प्रति भी नतमस्तक है, जो साहस से भरे हुए थे और जिनका संकल्प अटूट था, बल्कि यूँ कहिए कि जो स्वयं साहस और संकल्प की साक्षात प्रतिमा थे। ऐसे लोगों को जेल में डाल दिया गया और वह भी निश्चित दिनों, महीनों, वर्षों के लिए नहीं, बल्कि निरवधि समय के लिए अर्थात् अनंत काल के लिए यानी जीवन भर के लिए। वे लोग आज़ादी को पाने के लिए दीवाने थे। उन्होंने तमाम दुनियादारी को भूलकर आज़ादी पाने को ही अपना परम लक्ष्य मान लिया था। कवि ने इसी के लिए 'धुन' शब्द का प्रयोग किया है। इस अनंत काल के कारावास के कारण उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

पाठगत प्रश्न-20.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हिम समाधि का अर्थ है

(क) बर्फ जैसी सफ़ेद समाधि ☐ (ख) बर्फ़ का चबूतरा ☐

(ग) बर्फ़ के नीचे दब कर मर जाना ☐ (घ) बर्फ़ीले प्रदेश के कष्टों को झेलना ☐

2. कवि सफलता से अधिक महत्त्व किसे देता है?

(क) बाधाओं को ☐ (ख) प्रयत्नों को ☐

(ग) असफलता को ☐ (घ) प्रसिद्धि को ☐

3. यह दुनिया किन्हें भूल गई है:

(क) प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को

(ख) स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने वालों को

(ग) फाँसी पर चढ़े अनाम लोगों को

(घ) कुछ दिन पहले की घटनाओं को

4. कौन-सा विशेषण 'साहस' के लिए ठीक नहीं है–

(क) अपूर्व (ख) दुर्दम

(ग) दृढ़ (घ) असीम

20.2.5 अंश-5

आइए आगे बढ़ते हैं और कविता के अंतिम अंश की पाँच पंक्तियों को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लेते हैं।

कविता की इन पंक्तियों में ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है, जिनकी सेवाओं की तुलना किसी से नहीं की जा सकती तथा जिन्होंने निस्स्वार्थ, समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। इन लोगों ने अपने कार्यों का कभी प्रचार नहीं किया। आशय यह है कि दिन-रात देश, समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित ऐसे लोगों ने अपने त्याग और बलिदान को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझा। उन्होंने श्रेय पाने की चिंता कभी नहीं की। इनका नाम किसी अख़बार या किताब में नहीं छपा।

> जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
> पर विज्ञापन से रहे दूर
> प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
> कर दिए मनोरथ चूर-चूर।
>
> –उनको प्रणाम!

आप जानते होंगे कि कई लोग ऐसे होते हैं जो काम कम करते हैं, पर अपना प्रचार बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया जानने लगती है। पर ऐसे भी लोग होते हैं, जो बहुत काम करने पर भी आत्मप्रचार से दूर रहते हैं। कवि ऐसे लोगों को आदर के साथ प्रणाम करता है। वह इन अनाम लोगों की सेवाओं को महत्त्वपूर्ण मानता है। राष्ट्र के निर्माण की नींव में इनकी सेवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कार्य करते हुए ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं कि किसी के सपने चूर-चूर हो जाएँ, लेकिन इससे सपनों का महत्त्व कम नहीं हो जाता। कवि उन लोगों के महत्त्व पर बार-बार बल देता है जो मानवता और देश के सुखमय भविष्य के सपने देखते हैं और उसके लिए प्रयत्न करते हैं, भले ही वे उन सपनों को पूरा होते न देख सकें। यदि कोई मनुष्य भविष्य के विषय में कोई अच्छा विचार देता है, तो उस विचार पर उसके बाद भी अमल करने वाले लोग पैदा होते हैं और एक न एक दिन उसके विचारों को लेकर समाज आगे बढ़ता है।

टिप्पणी

आइए, दो शब्दों के बीच अंतर को समझें। वे शब्द हैं– सफलता और सार्थकता। इनके बारे में आप 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' पाठ में भी पढ़ रहे हैं।

सफलता व्यक्तिगत या निजी भी हो सकती है, पर सार्थकता सामाजिक होती है। वही कार्य या व्यक्ति सार्थक है जो समाज के भले के लिए हो। कविता के अंतिम अंश में कवि ने सार्थक प्रयासों को प्रणाम किया है।

क्रियाकलाप-20.2

कभी-कभी आपको लगा होगा कि किसी कार्य के पूर्ण हो जाने पर सफलता का श्रेय उन लोगों को नहीं मिल पाता, जिन्हें मिलना चाहिए। ऐसा क्यों होता है? किन्हीं दो उदाहरणों के माध्यम से उल्लेख कीजिए।

20.3 भाव-सौंदर्य

आपने 'उनको प्रणाम' कविता को पढ़ और समझ लिया है। आपने यह भी जान लिया है कि कवि उन लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त कर रहा है, जो नींव की ईंटों की तरह हैं, जिनके ऊपर पूरी इमारत टिकी होती है। ये लोग कंगूरों की भाँति सबको दिखाई नहीं देते। आम आदमी उन कंगूरों को देखता है और सराहता है, लेकिन उसका ध्यान उन ईंटों की ओर नहीं जाता जो नींव में दबी हैं। कवि ने उन्हीं ईंटों को महत्त्व दिया है, जो पूरी इमारत के वज़न को बर्दाश्त किए हुए हैं।

आम धारणा यह है कि नायक वे ही होते हैं, जो कामयाब हो जाते हैं। कहावत भी है–जो जीता वही सिकंदर। कवि नागार्जुन इस सोच को तोड़कर आम आदमी का ध्यान इस ओर ले जाते हैं कि महानायक वे भी हैं जो बड़े उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जीवन-भर जूझते रहे और संकटों के बावजूद जिन्होंने हार नहीं मानी। जीतने वाला राजा बन सकता है, सिकंदर शासक ही था, लेकिन नायक तो वही है जिन्होंने हार नहीं मानी, भले ही साधनों के अभाव, परिस्थितियों की प्रतिकूलता तथा दमन करने वालों ने उनके सपनों को पूरा नहीं होने दिया। कवि फल को नहीं, कर्म को प्रधानता देता है। वह मानता है कि कर्मरत लोगों का संघर्ष व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि आने वाली पीढ़ियाँ इस संघर्ष को आगे ले जाती हैं और अंततः मानव-समाज उनके फल का सुख भोगता है।

इस भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने योद्धाओं, नाविकों, पर्वतारोहियों, आंदोलनकारियों और विचारकों के उदाहरण दिए हैं। इन क्षेत्रों में अपने जीवन में सफलता पाने वाले लोगों के नाम तो इतिहास में दर्ज़ हैं, पर इन कामों को आरंभ करने और आगे बढ़ाने वाले लाखों ऐसे लोग हैं जो गुमनाम रह गए। कवि के अनुसार वे भी उतने ही सम्मान के अधिकारी हैं।

इसीलिए हर चरण के बाद कवि ने 'उनको प्रणाम' दोहराया है। नागार्जुन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे संघर्षशील और सार्थक व्यक्तियों के प्रति हमेशा ध्यान दिखाते रहे जिन्हें उपेक्षा और असफलता का सामना करना पड़ा।

20.4 भाषा-सौंदर्य

नागार्जुन की कविताओं में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली भी है और ठेठ देसी शब्द भी नागार्जुन का शब्द-चुनाव भाव दृश्य और परिस्थिति को उकेरने में सक्षम होता है। 'उनको प्रणाम' कविता में संस्कृतनिष्ठ शब्दों तथा अनेक सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है, जैसे– पूर्ण-काम, लक्ष्य-भ्रष्ट, उदधि-पार, कृत-कृत्य, हिम-समाधि आदि। ये सामासिक पद अनेक शब्दों के लिए एक शब्द भी हैं। इनका प्रयोग करके कोई भी रचनाकार या लेखक भाषा के अनावश्यक प्रयोग से बच सकता है।

आपका भी ध्यान इस बात पर ज़रूर गया होगा कि इस कविता में भावों के अनुकूल भाषा का उपयोग है। इस कविता के अधिकतर शब्द 'तत्सम' हैं– यह हम जान चुके हैं। संस्कृतनिष्ठ शब्दों को 'तत्सम' कहते हैं। कविता में आए कुछ तत्सम शब्द देखिए–

कुंठित, लक्ष्य-भ्रष्ट, अभिमंत्रित, उदधि, नव, दुर्दम, मनोरथ।

लेकिन, साथ ही 'नैया' और 'धुन' जैसे शब्द बोलचाल की भाषा के हैं। 'धुन' संगीत की भी होती है, लेकिन यहाँ धुन का अर्थ है- 'लगन'। जो व्यक्ति किसी कार्य में दृढ़ता से लग जाता है उसे 'धुन का पक्का' कहा जाता है।

इसी प्रकार, छोटी-सी नैया लेकर समुद्र पार करने चल पड़े जो नाविक समुद्र की लहरों में ही समा गये, उन्हें आदर देते हुए कवि ने उनकी मृत्यु को 'निराकार' होना बताया है। वे अपना भौतिक अस्तित्व-साकार रूप खो देते हैं। निराकार का एक अर्थ ब्रह्म होता है। साहसी वीर को 'निराकार' बताकर कवि ने उसकी मृत्यु को गौरव प्रदान किया है। भाषा-प्रयोग द्वारा साधारण तथ्य किस प्रकार गरिमा मंडित होता है, उसका यह उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-20.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. विज्ञापन का अर्थ है–

   (क) सूचना (ख) ज्ञापन

   (ग) आदेश (घ) प्रचार

2. 'प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके कर दिए मनोरथ चूर-चूर' का आशय है–

   (क) विपरीत परिस्थितियों ने कामनाओं को पूरा नहीं होने दिया।

   (ख) प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पा ली गई।

   (ग) परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल लिया।

   (घ) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को पा लिया।

3. सपने देखना कब सार्थक है?

   (क) जब वे सच हो सकें

   (ख) जब उनका प्रचार किया जा सके

   (ग) जब उनके लिए प्रयास किए जाएँ

   (घ) जब उनका अनुकरण किया जा सके

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- जीवन में सफलता से अधिक महत्त्व प्रयत्न और संघर्ष का है।
- जिन लोगों ने देश और समाज के पक्ष में संघर्ष किया है, उनके संघर्ष का सम्मान किया जाना चाहिए।
- हमारी उपलब्धियों के पीछे असंख्य-अनाम लोगों का योगदान है। उनका जीवन भले ही सफल न कहा जाय, पर सार्थक ज़रूर कहा जाएगा, क्योंकि हमारी उपलब्धियों के पीछे उनके संघर्ष का बड़ा योगदान होता है।
- सफलता व्यक्तिगत भी हो सकती है, लेकिन वह सार्थक तभी है जब ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के भले के लिए हों।
- यह कविता छंद में है और इसकी भाषा तत्सम प्रधान है।

योग्यता विस्तार

नागार्जुन का जन्म 1911 में दरभंगा (बिहार) के तरौनी ग्राम में हुआ था। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था। साहित्य-समाज में उन्हें आदर देने के लिए बाबा नागार्जुन कहा जाता है।

नागार्जुन हिन्दी के एक बड़े व्यंग्यकार हैं। वे प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि हैं। उन्होंने अपनी व्यंग्यपरक कविताओं में शोषक-व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोला है। उनकी कविता में दलितों-शोषितों और उपेक्षितों लिए गहरी सहानुभूति का भाव है। अपने भाव और अनुभव के विस्तार की ही तरह उनकी कविता में भाषा और छंद का भी व्यापक संसार है। उन्होंने तत्सम, तद्भव देशज, और आगत (विदेशी मूल के) शब्दों प्रयोग आवश्यकता के अनुसार किया है। इसी प्रकार उन्होंने संस्कृत के छंदों से लेकर मुक्तछंद और छंदमुक्त छंदों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। उन्होंने मैथिली, संस्कृत, बांगला और हिंदी भाषाओं में काव्य-रचना की। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया उपन्यास है–रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे आदि। हिंदी में प्रकाशित उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं–'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगे पंखों वाली', 'तालाब की मछलियाँ', 'हज़ार-हज़ार बाँहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'तुमने कहा था', 'पका है यह कटहल', 'अपने खेत में' आदि।

मैथिली में वे 'यात्री' उपनाम से लिखते थे। मैथिली में उनका कविता-संग्रह है- 'पत्रहीन नग्न गाछ'।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. 'उनको प्रणाम' शीर्षक की सार्थकता का क्या महत्त्व है? क्या आप इस शीर्षक से सहमत हैं, क्यों? तर्कसहित उत्तर दीजिए।
2. कवि कविता के हर पद के अंत में 'उनको प्रणाम' क्यों कहता है?
3. कविता का मूल भाव क्या है?
4. 'उदधि-पार' करने से कवि का क्या आशय है?
5. कवि इस कविता में किन लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट करता है?
6. जो छोटी-सी नैया लेकर
   उतरे करने को उदधि पार,

   इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. 'जिनकी धुन का कर दिया अंत' से कवि का क्या आशय है?
8. यदि देशभक्त अपना बलिदान न देते तो आज हमारी क्या स्थिति होती? तर्क सहित लिखिए।
9. निम्नलिखित कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

   मैं हूँ उनके साथ खड़ी
   जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

   कभी नहीं जो तज सकते हैं
   अपना न्यायोचित अधिकार,
   कभी नहीं जो सह सकते हैं
   शीष नवाकर अत्याचार,
   एक अकेले हों या उनके
   साथ खड़ी हो भारी भीड़,

   मैं हूँ उनके साथ खड़ी
   जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

   निर्भय होकर घोषित करते
   जो अपने उद्गार-विचार
   उनकी जिह्वा पर होता है
   उनके अंतर का अंगार
   नहीं जिन्हें चुप कर सकती है
   आतताइयों की शमशीर

टिप्पणी

मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

(क) 'रीढ़ सीधी रखने' क्या का तात्पर्य है?
(ख) क्या दूसरों के साथ मिलकर ही संघर्ष किया जा सकता है? तर्क सहित विचार कीजिए।
(ग) आपके अनुसार कविता में 'मैं' का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
(घ) 'जिनकी जिह्वा पर होता है उनके अंतर का अंगार' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ङ) कविता का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 1. (घ) 2. (ख) 3. (घ), 4. (ख)

20.2 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ग)

20.3 1. (ग), 2. (ख), 3. (ग), 4. (ग)

20.4 1. (घ), 2. (क), 3. (ग)